के भी वस्तु जिसमें हमें सुख की अनुभूति हो रही है उसे हमें खो जाने का अंदेशा रहता है। बुद्ध के अनुसार सुख एवं दुःख में कोई अन्तर नहीं है। बुद्ध के अनुसार मनुष्य मृत्यु के विचार से भयभीत एवं चिन्तित रहता है। समस्त संसार आग में जल रहा है ऐसी अवस्था में आनन्द मनाने का अवसर कहाँ है, संसार के दुःखमयता की ओर संकेत करता है। महात्मा बुद्ध के इस विचार को चार्वाक को छोड़ कर अन्य के भारतीय दार्शनिकों ने स्वीकार किया है। चार्वाक विश्व को दुःखों से परिपूर्ण माना है।

बौद्ध के इस मत को जर्मन के समकालीन दार्शनिक सोपेनहावर भी समर्थन है। बुद्ध ने संसार के दुःखों पर अत्यधिक बल दिया है इस लिए बौद्ध दार्शनिक को निराशावादी कहते हैं। निराशावाद के अनुसार विश्व आशा के बजाय निराशा के भावना को पनपने में अहम भूमिका निभाती है। बुद्ध ने दुःख निरोध को परम लक्ष्य माना है। दुःख-निरोध जिसे निर्वाण कहा जाता है जीवन का आदर्श है इसलिए बौद्ध दर्शन को निराशावादी कहना भ्रम है इस प्रकार हम कह सकते हैं कि बौद्ध दर्शन का आरम्भ निराशावाद है, परन्तु अन्त आशावाद में होता है